प्राचीन भारतीय खगोल शास्त्र
का प्रामाणिक ग्रन्थ

वराहमिहिरप्रणीता

पञ्चसिद्धान्तिका

'दामोदर' भाषाभाष्यसंवलिता

हिन्दी टीकाकार
डॉ. सत्यदेव शर्मा

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

॥ श्रीः॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

470

वराहमिहिरप्रणीता

पञ्चसिद्धान्तिका

'दामोदर' भाषाभाष्यसंवलिता

भाषाभाष्यकार:

डॉ० सत्यदेव शर्मा

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

© सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण, या किसी भी विधि (जैसे - इलेक्ट्रोनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉडिग या कोई अन्य विधि) से प्रयोग या किसी ऐसे यंत्र में भंडारण, जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो, प्रकाशक की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नही किया जा सकता है।

प्रकाशक :

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के-37/117 गोपाल मंदिर लेन, पोस्ट बॉक्स न. 1129
वाराणसी-221001
दूरभाष : (0542) 2335263

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
प्रथम संस्करण : 2009
मूल्य : 500.00

अन्य प्राप्तिस्थान :

चौखम्बा पब्लिशिंग हाऊस

4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)
गली न. 21-ए, अंसारी रोड़, दरियागंज
नई दिल्ली - 110002
दूरभाष: (011) 32996391, टेलीफैक्स: (011) 23286537

*

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान

38. यू. ए. बंग्लो रोड़, जवाहर नगर,
पोस्ट बॉक्स न. 2113, दिल्ली - 110007

*

चौखम्बा विद्याभवन

चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)
पोस्ट बॉक्स न. 1069, वाराणसी-221001

मुद्रक
डीलक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

विषयानुक्रमणिका

अवतरणिका
प्रथमोऽध्यायः – करणावतारः **1-17**
ग्रंथ का उद्देश्य 1
पाँच सिद्धान्त 2
ग्रंथ में प्रतिपादित विषय-वस्तु 4
रोमक सिद्धान्तानुसार अहर्गण 5
पौलिश सिद्धान्तानुसार अहर्गण 7
सौर तथा रोमक सिद्धान्तानुसार रवि-चन्द्र युग 10
वर्षपति 11
मासपति 13
होरापति 14
वर्षाधिपति आदि 15
फलादेशार्थ राश्यंशपति आनयन 16
द्वितीयोऽध्यायः – वासिष्ठसिद्धान्तः-नक्षत्रादिच्छेदः **18-30**
स्फुटरवि 18
चन्द्रस्पष्ट 20
नक्षत्र – तिथि 24
दिनमान 25
शङ्कुच्छाया 27
छाया से लग्न तथा लग्न से छाया ज्ञान 28
तृतीयोध्यायः – पौलिशसिद्धान्तः **31-54**
स्फुटरवि 31
चन्द्रगति 33
मन्दफल 35
चर 37
दिनमान 37
देशान्तर नाडि ज्ञान 38

इष्टदेश में अस्तकाल 40
नक्षत्रानयन 40
रवि दैनिक गति 41
करण 41
व्यतिपातवैधृती 43
षडशीतिपुण्यकालः 46
अयनम् 46
संक्रान्तिकाल 47
तीन दिन स्पर्श योग 47
राहुः 48
चन्द्र का विक्षेप 49
भद्रविष्णुमत में दोष 50
भद्रविष्णु के अन्य दोष 51

चतुर्थोऽध्यायः – करणाध्यायश्चतुर्थः – त्रिप्रश्नाधिकारः 55-88

ज्यानयन 55
ज्यामान में अन्य 58
ज्याखण्डसंबंधि अन्य 61
रविचन्द्र की क्रान्ति व शर ज्ञान 63
दिग्ज्ञान 65
छाया से अक्षांश ज्ञान 65
मध्याह्नछाया 66
लम्बज्या व दिनव्यास 67
मेषादि की क्रांतिज्या तथा वहाँ पर दिन का व्यास 68
चरआनयन 69
प्रकारान्तर से अक्षज्या लम्बज्या ज्ञान 70
लङ्कोदयराशिमान 71
स्वदेश में उदयमान 72
दिनार्ध अथवा समशङ्कुज्ञान 73
दिनार्धकाल के खण्डों का ज्ञान 74
शङ्कु तथा उसकी छाया 75

गणक की योग्यता 76
सममण्डल में प्रवेश की परीक्षा 76
अग्रानयन 76
प्रकारान्तर से अक्षांशानयन 77
इष्टकाल पर छाया का आनयन 77
छाया से इष्टकाल आनयन 80
प्रकारान्तर से इष्टकाल आनयन 83
इष्टकाल से छायाज्ञान 84
चन्द्र छाया आनयन 84
चन्द्र की क्रान्त्यादि साधन 85
कोटिसाधन 85
बेध से रविज्ञान 87

पञ्चमोऽध्यायः – शशिदर्शनम् 89-95

प्रतिपदान्त पर चन्द्रदर्शन ज्ञान 89
उत्तरशृङ्गोन्नति फल व शुक्ल भाग साधन 91
चन्द्रशृङ्गोन्नति तथा उसका परिलेखन 92
चन्द्र का दैनिक उदयास्त साधन 93

षष्ठोऽध्यायः – चन्द्रग्रहणम् 96-104

सूर्य चन्द्र की समान कलायें 96
चन्द्रग्रहण की संभावना 97
ग्रहणस्थितिकाल 98
विमर्दकालसाधन 99
निमज्जनकाल, वलनादि तथा स्पर्शमोक्ष दिशा साधन 100
ग्रहण का परिलेखन 103
रविचन्द्र ग्रहण का भेद 104

सप्तमोऽध्यायः – पौलिशसिद्धान्ते रविग्रहणम् 105-108

लम्बन ज्ञान 105
नति 105
ग्रहण कर्म 107

अष्टमोऽध्यायः – रोमक सिद्धान्तेऽर्क ग्रहणम् **109-118**
रविस्फुटीकरण 109
स्पष्टचन्द्र 110
रवि-चन्द्र की गतिसाधन 112
राहुसाधन 112
लम्बन ज्ञान 113
दृक्क्षेप आनयन 113
नतिसाधन तथा बिंबमानसाधन 115
रवि-चन्द्र का स्फुट बिम्बमानायन 117
स्थितिसाधन 117
ग्रासमान व परिलेखन 118
नवमोऽध्यायः – सूर्यसिद्धान्ते - सूर्यग्रहणम् **119-132**
मध्यमरविसाधन 119
चन्द्रसाधन 120
चन्द्रोच्चानयन 121
संस्कार 121
राहुसाधनम् 123
सूर्यचन्द्र का फल तथा भुजान्तर 124
देशान्तर संस्कार 126
चालनार्थ मध्यम गति 126
चन्द्रोच्च एवं केन्द्र भुक्ति 127
रविशशि की स्फुट गति 127
सूर्य चन्द्र की कक्षा स्फुटीकरण 128
चन्द्र सूर्य के बिम्बमान 129
मध्यज्या व मध्यलग्न साधन 130
रविदृक्क्षेप तथा लम्बन 130
शङ्कुसाधन 131
लम्बितपर्वान्तज्ञान 131
नति तथा स्पष्टनति ज्ञान 132
स्थितिसाधन 132

दशमोऽध्यायः – सूर्यसिद्धान्ते - चन्द्र ग्रहणम् **134-139**
पूर्व(अध्याय 9 में) प्राप्त अवयवों से भूभा आनयन 134
ग्रहण स्थितिज्ञान 136
इष्टकालिक ग्रास ज्ञान 137
विमर्दकालज्ञान 138
एकादशोऽध्यायः – चन्द्रग्रहणमनुवर्णनम् **140-143**
अपमण्डलादि का अङ्कन 140
स्पर्शमोक्ष बिन्दुओं का अङ्कन 141
अङ्गुल लिप्ता ज्ञान 142
द्वादशोऽध्यायः – पैतामहसिद्धान्तः **144-151**
अहर्गण ज्ञान 144
तिथि तथा रवि-चन्द्र के नक्षत्रानयन 145
पूर्वविद्धा-परविद्धा तिथि तथा व्यतिपात साधन 146
दिनमान ज्ञान 148
त्रयोदशोऽध्यायः – त्रैलोक्यसंस्थानम् **152-169**
भूगोलवर्णन 152
देव तथा असुरों की स्थिति 153
भूभ्रमण कथन का खण्डन 153
अर्हत्मत तथा उसका खण्डन 154
भचक्रव्यवस्था 155
संहिता ग्रंथोक्त देवताओं के दिन रात्री मान का खण्डन 156
भूमि पर प्रतिअंश रेखांश की योजन दूरीमान 157
भूमि की परिधि का परिमाण तथा मेरुस्थान 158
विशेष बात 159
दिनमान के लिए विशेष 160
देश विशेष में सदा दृश्यादृश्य राशियाँ 161
ध्रुव की स्थिति 162
मेरु स्थान के लिए विशेष 163
ध्रुव वेध 164
चन्द्र का सित-असित ज्ञान 166

ग्रहों की कक्षा क्रम 167
मासाधिपति आदि को शीघ्र स्मरणार्थ युक्ति 168
चर्तुदशोऽध्यायः – छेद्यकयन्त्राणि 170-190
यन्त्र के द्वारा चरज्ञान 170
इष्ट नाडी से छाया तथा छाया से इष्ट नाडी का ज्ञान 172
निरक्षोदय ज्ञान 173
मध्याह्न छाया से अक्षांश ज्ञान 174
वेध से रवि ज्ञान 175
वेध से तिथि ज्ञान 176
चन्द्रस्थान ज्ञान 177
भाभ्रम रेखाज्ञान 177
क्षितिजादि के लक्षण 178
अर्धकपाल यंत्र के द्वारा बेध से लग्न तथा इष्ट काल का ज्ञान 180
चक्रयन्त्र के द्वारा वेध से रवि का मध्याह्न नतांश ज्ञान 181
वेध के द्वारा प्रकारान्तर से इष्टकाल का ज्ञान 182
दिन की वृद्धि तथा ह्रास का कारण 183
यन्त्रादि बनाने की मूल आवश्यकतायें तथा
यन्त्रों की युक्ति को बताने के पात्र 185
घटी यन्त्र 186
तारा तथा चन्द्र का योगकाल 187
युति के लिए नक्षत्र के कौन सा चिन्ह योगतारा का वेध करे 187
अगस्यतारा का उदयकाल 188
पञ्चदशोऽध्यायः – ज्योतिषोपनिषत् 191-200
स्थान विशेष पर ग्रहणादि संबंधी विशेष 191
चन्द्रलोक तथा मैरू के लिए विशेष 192
सूर्यग्रहण का कारण तथा विशेष बात 193
मेरु स्थान दिशादि ज्ञान 195
मेरु के लिए पुनः विशेष 196
दिवसारम्भ के संबंध में अनेक मत 197
विशेष बात 198

युग का आदिकाल 199
देशान्तर के लिए विशेष 199
दिनाधिपति के संबंध में मतान्तर 199
होरापति के लिए विशेष 200
सिद्धान्त 200
षोडशोऽध्यायः – सूर्यसिद्धान्ते मध्यगतिः 201-205
बुध, शुक्र, भौम, गुरु तथा शनि मध्यम 201
भौमादि मध्य के द्वितीय खण्ड से उत्पन्न संस्कार 202
भौमादि के क्षेपक 203
बुध शीघ्रोच्च 203
शुक्र शीघ्रोच्च 204
बुध-शुक्र के शीघ्रोच्चों के क्षेपक 204
भौमादि के बीजकर्म 204
सप्तदशोऽध्यायः – ताराग्रहस्फुटीकरणम् - सौरसिद्धान्तः 206-212
ग्रह मन्द परिधी तथा मन्दोच्चांश 206
भौमादि ग्रहों के शीघ्रपरिधी 207
भुजकोटीज्ञान 207
शीघ्रफलज्ञान 208
मन्दफलमाह 208
स्फुटग्रह साधन 209
बुध शुक्र के लिए विशेष संस्कार 209
उदय कालांश 209
भौमादि के शरानयन 211
अष्टादशोऽध्यायः – पौलिशसिद्धान्ते ताराग्रहाः 213-249
वसिष्ठमत से शुक्रचार 213
गति 214
गुरु उदयादि 216
शनिचार 220
भौमचार 223
बुधस्यचारादि 229

मेषराशि में गति	231
वृषभ राशि में गति	232
मिथुन में गति	232
कर्क में गति	233
सिंह राशि में गति	233
कन्या में गति	234
तुला में गति	235
वृश्चिक में गति	235
धनुराशि में गति	236
मकर राशि में गति	236
कुंभराशि में गति	237
मीन राशि में गति	237
बुध की गति का निर्णय	238
अक्षदृक्कर्म	238
कालांश तथा उनका स्फुटीकरण	239
ग्रंथोपसंहार	240
उदयास्तादि के लिए विशेष	242
कुजोदयादिक	243
बुध का उदयादि	244
गुरुउदयादि	245
शुक्रोदयादि	246
शनि के उदयादि	248
परिशिष्ट-1	**250**
परिशिष्ठ–2	**255**
श्लोकानुक्रमणिका	**266**
शुद्धि पत्र	**280**

अवतरणिका

भारत के महान खगोलशास्त्रियों में से एक आर्यभट ने प्रथम बार पाँचवी शताब्दी में भारतीय खगोल शास्त्र के ज्ञान में से कुछ सांकेतिक ज्ञान अपनी लिखित पुस्तक 'आर्यभटीय' में दिया। उसी का अनुसरण करते हुए वराहमिहिराचार्य ने इस परम्परा को आगे बढाया तथा इस पञ्चसिद्धान्तिका ग्रंथ की रचना की। आर्यभट ने अपने ग्रंथ में जो कुछ लिखा उसमें उन्होंने यह उद्घाटित नहीं किया कि उनके द्वारा उद्धृत खगोल के सिद्धान्त किन पूर्ववर्ति आचार्यों द्वारा बताये गये थे तथा उनमें उनके स्वयं के प्रतिपादित सिद्धान्त व सूत्र कौन से हैं? इस कमी को वराहमिहिराचार्य ने पूरा किया तथा यह बताने का प्रयास किया कि भारत में प्रसारित हुए आर्यभटोक्त शास्त्र ज्ञान के अतिरिक्त, कौन सा खगोल का अन्य ज्ञान भण्डार आचार्यों द्वारा पूर्व में प्रतिपादित किया गया था? उनमें से कुछ का उल्लेख ग्रंथ में किया। आर्यभट की भांति ही वराहमिहिर ने भी कहीं भी, अन्तिम भाग के अतिरिक्त, स्वकृत अथवा स्वप्रतिपादित सिद्धान्त अथवा सूत्र की चर्चा नहीं की लेकिन मुख्य रूप से प्रयुक्त पाँच सिद्धान्तों का विस्तृत रूप से उल्लेख किया। आचार्य ने जिन परिभाषाओं तथा गणनाओं व सूत्रों को उनके प्रवर्तक आचार्य का नाम नहीं दिया है वे सम्भवतः आधार भूत अवयव होने के कारण किसी आचार्य को उनका प्रवर्तक कहना संभव नहीं था जैसे त्रिप्रश्नाधिकारोक्त विषय सामग्री, अध्याय-13-14-15 में उक्त विषय सामग्री आदि।

आचार्य वराहमिहिर द्वारा रचित इस ग्रंथ तथा उन्हीं के द्वारा रचे गए 'बृहद्संहिता' ग्रंथ में, वेदाङ्गज्योतिष पूर्व काल से लेकर उनके काल तक फले-फूले खगोल तथा उससे संबन्धित अन्य विषयों संबन्धी ज्योतिष ज्ञान को बहुत सीमा तक लिपिबद्ध किया गया है, शेष कुछ कमी आर्यभट के आर्यभटीय–ग्रंथ के द्वारा पूरी होती है।

आचार्य द्वारा लिखा गया पं. सि. ग्रंथ शायद इसलिए भी अधिक प्रचलित तथा प्रतिष्ठित नहीं हो सका क्यों कि यह भारतीय ज्योतिष-खगोल शास्त्र का एक प्रकार से इतिहास रूप में था, लेकिन गणनाओं के फल शुद्ध नहीं थे। आर्यभट के ग्रंथ अधिक क्रमबद्ध तथा शुद्ध फल देने वाले थे। फिर